17

''वह समय आता है''

(यूहन्ना 16)

''मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय आया है, कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूंगा, परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा। उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूंगा। क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिए कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता की ओर से निकल आया। मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं'' (आयतें 25-28)।

विभिन्न संदर्भों में यीशु ने सेवकाई के समय के काल को चिह्नित करने के लिए ''अपने समय'' पदनाम का इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में किया। उसने अपने ईश्वरीयता के अनावरण के समय को इसमें लेने के लिए इसका इस्तेमाल किया। गलील के काना में विवाह की दावत में उसने अपनी माता से कहा था, ''हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा *समय* नहीं आया'' (यूहन्ना 2:4)। पिता की गैर स्थानीय आराधना के निकट आने की ओर इशारा करने के लिए उसने इसी शब्द का इस्तेमाल किया था। उसने कहा, ''परन्तु वह *समय* आया है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधना करने वालों को ढूंढता है'' (यूहन्ना 4:23)। हम यह भी देखते हैं कि उसने इसका इस्तेमाल अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के सम्बन्ध में भी किया। लाज़र की कब्र पर उसने कहा, ''अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस *घड़ी* से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं'' (यूहन्ना 12:27)।

गुरुवार देर रात, गिरफ्तार करने के लिए आने वाली भीड़ के निकट आने पर यीशु ने अपने प्रेरितों के साथ आगे को देखा और उन्हें उस अद्भुत घड़ी के बारे में बताया जो आने वाली है। क्रूस पर चढ़ाए जाने के दुख और उलझन भरे समय के बाद एक विशेष अर्थात तेज़ से भरी घड़ी आने वाली थी। आश्वासन के सार्थक अवसरों के साथ, यीशु ने कहा, ''... वह समय आता है'' (16:25)। उसकी भविष्यवाणी समय के उस छोटे से पल के लिए नहीं थी जो आने वाला था और शीघ्र ही जाने वाला था। इसमें समय का अभी होने वाला वह पल, अर्थात पूर्ण और सम्पूर्णता का समय अर्थात मसीही युग का प्रारम्भ था। ऐसा आश्वासन प्रेरितों के लिए शक्ति देने वाली बात है। यह वह अन्तिम विस्तृत प्रतिज्ञा थी जो यीशु ने अपनी विदाई के लिए अपने प्रेरितों को ब्यान करते हुए उनके साथ बातचीत में की।

आइए गहराई से देखते हैं कि यह घड़ी या समय क्या था, जिसकी ओर उसने ध्यान दिलाया। हमें उस समय के पूरा होने के अर्थ को वैसे ही समझने की कोशिश करनी आवश्यक

है जैसे प्रेरितों के लिए थी।

समझ का समय

पहले तो यह स्पष्ट समझ का समय था। यीशु ने उनसे कहा, ''मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं; ... परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा'' (16:25)।

यीशु उस सब के बारे में जो उसके साथ होने वाला था धीरे-धीरे पिता की इच्छा को बता रहा था। परन्तु प्रेरितों और नये नियम के मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में समझ की परिपूर्णता में प्रवेश करने का समय शीघ्र निकट आ रहा था। प्रभु ने पहले प्रतीकात्मक भाषा अर्थात दृष्टांतों में बात की थी जिसमें उसने दाखरस के रूपक (15:1-8) और जनने की पीड़ा वाली स्त्री का उदाहरण दिया था (16:20-22)। ये नमूना समझ मिलने तक उसके सुनने वालों के मनों में सच्चाई को बनाए रखने के लिए काफ़ी था। उसकी सेवकाई में दृष्टांतों, उपमाओं और रूपकों का इस्तेमाल किया गया था। परन्तु वह समय निकट आ रहा था जब ऐसी भाषा अनावश्यक होनी थी।

पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर प्रेरितों को परमेश्वर की योजना का पूरा ज्ञान मिल जाना था। उनके प्रचार करने और सीखने के समय वह ज्ञान जो परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया था उन सब में भरा जाना था जो विश्वास करना चाहते थे। पूर्ण समझ का दिन आरम्भ हो रहा था जिसमें मसीही छुटकारे का आधार बन रहा था। विश्वासियों को सच्चाई का ज्ञान होना था ताकि सच्चाई उन्हें अज्ञानता, उलझन, और उस नासमझी से आज़ाद करे जिसमें वे पहले फंसे हुए थे।

पहुंच का समय

दूसरा, वह समय आ रहा था जब पिता तक सीधी पहुंच सम्भव होनी थी। यीशु ने कहा,

> उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूंगा। क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिए कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता की ओर से निकल आया (16:26, 27)।

ग्यारह के साथ अपनी पहली बातचीत में उसने प्रतिज्ञा की थी वह उससे मांग सकते हैं और पिता उनकी विनतियों को सुनेगा (16:23, 24)। परन्तु वह पिता के साथ अपनी एकता और एक होने का सबूत दे रहा था। उसने पिता से वैसे ही प्रार्थना करनी थी जैसे वे पुत्र के साथ प्रार्थना करते थे। संसार के होने से पहले यीशु पिता के साथ था; अब वह पिता के पास अपने पहले वाले स्थान में लौट रहा था। इस सम्बन्ध में उनके इस विश्वास के कारण कि यीशु अपने पिता की ओर से आया है, यीशु और पिता कार्य का करना था और प्रेरितों के प्रति एक रूप में जवाब देना था।

प्रेरितों और सब विश्वासियों की अब पिता और पुत्र तक पूरी पहुंच हुई थी। यशायाह 57:19 में से उद्धृत करते हुए, पौलुस ने लिखा:

> और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास

पहुंच होती है (इफिसियों 2:17, 18)।

यीशु ने अपने प्रेरितों से जो कहा वह प्रार्थना के लिए हमारा सबसे बड़ा निमन्त्रण है। उन्हें यीशु के द्वारा पिता से प्रार्थना करनी थी, जो पिता के पास होना था। यीशु पिता के साथ एक है और वह प्रेरितों को जानता और उसे देखता है, इसलिए पिता को भी उन्हें जानना और उन से प्रेम करना था। वे पुत्र को पिता की ओर से भेजा मानते और उसकी आज्ञा का पालन करते थे इसलिए पिता ने उन्हें मानकर आशीष देनी थी।

विश्वास का समय

तीसरा, यह अधिकृत विश्वास का समय होगा। एक बार फिर से उसके शब्दों पर विचार करते हैं:

> उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिए पिता से बिनती करूंगा। क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिए कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता की ओर से निकल आया। मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं (16:26-28)।

यीशु की ईश्वरीयता में वे पक्का, ठोस विश्वास बना रहे थे। उनमें बढ़ने वाला विश्वास था, यदि इससे पहले उनमें कोई संदेह था, यीशु ''पिता की ओर से आया है।''

अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु ने कई पक्के प्रमाणों के साथ दिखाना था कि वह सचमुच में मुर्दों में से जी उठा है (प्रेरितों 1:2, 3)। फिर प्रेरितों ने दर्शन, यहूदिया और सामरिया और पृथ्वी के छोर तक इस बात मसीह के गवाह होना था कि वह जी उठा है (प्रेरितों 1:8)। मसीही युग का आरम्भ विश्वास की पूर्णता का समय होना था।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के सम्बन्ध में दिया गया परमेश्वर का पूरा प्रमाण प्रेरितों ओर परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लोगों के काम में साफ़ दिखाई देता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र में विश्वास का प्रमाण देने के लिए जो भी योजना बनाई थी वह सब दे दिया है। जो कोई विश्वास करना चाहे विश्वास कर सकता है।

सारांश

अटारी वाली कमरे में उस रात यीशु अपने प्रेरितों से मृत्यु की परछाईं, ठुकराए जाने, और बुराई से आगे देखते हुए आशीष के उस चमकदार दिन को देखने को कह रहा था जो उसके बाद आने वाला था। आने वाला वह समय समझ का, पिता तक पहुंच, और अधिकृत विश्वास का समय होना था। इस समय के आने पर प्रेरितों को अपने आस पास की दिशाओं में स्थिर बने रहने की आशीष मिली। वे इस समय के आरम्भ रहने और उसे बनाने में सहायक थे। हमें इस समय के चलते रहने वाले जीवन में जीने का सौभाग्य मिला है। बिना किसी संदेह के हम सब लोगों से अधिक आशीषित हैं, क्योंकि हमें इस समय की पूर्णता में परमेश्वर के अनुग्रह से आनन्द करने की अनुमति मिली है।

''तब उन्हें बुलाया और चितौनी देकर यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखलाना। परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें'' (प्रेरितों 4:18-20)।